विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

डेंगू के खतरे से चेताती विश्व स्वास्थ्य संगठन की हालिया रिपोर्ट

यदि विश्व स्वास्थ्य संगठन की हालिया रिपोर्ट अतिशयोक्तिपूर्ण माने तब भी इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि डेंगू आज और आने वाले समय के लिए दुनिया के देशों के लिए गंभीर समस्या बनता जा रहा है। दुनिया के 129 देश डेंगू की गिरफ्त में आ चुके हैं तो इससे भी मतभेद नहीं हो सकता कि दुनिया के देशों में होने वाली बीमारियों में से 70 फीसदी बीमारी का केन्द्र एशिया महाद्वीप बना हुआ है। डेंगू दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से दुनिया के देशों को अपनी गिरफ्त में लेता जा रहा है। ड्ब्लूएचओ की ही माने तो आज दुनिया की आधी अबादी डेंगू संभावित क्षेत्र के दायरें में आ गई है। डेंगू की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि पेरु के अधिकांश इलाकों में डेंगू के कारण इमरजेंसी लगाई जा चुकी है तो अमेरिका जैसा विकसित देश भी इसके दायरें से बाहर नहीं है। एक मोटे अनुमान के अनुसार भारत में ही डेंगू के औसतन 600 मामलें प्रतिदिन आ रहे हैं।

दरअसल डेंगू एडीज प्रजाती के मच्छर से फैलता है। डेंगू के मच्छर के बारे में यह माना जाता है कि नमी बाले क्षेत्र खासतौर से पानी एकत्रित होने वाले स्थानों पर यह तेजी से फैलता है। सुबह के समय यह अधिक सक्रिय रहता है। यह भी माना जाता है कि डेंगू होने का दो तीन दिन के बुखार में जांच के दौरात तो पता ही नहीं चलता वहीं तीन चार दिन तक लगातार बुखार के बाद जांच कराने पर डेंगू का पता चलता है। यह भी सही है कि डेंगूं से प्रभावित लोग एक से दो सप्ताह में ठीक भी हो जाते हैं। पर कमजोर इम्यूनिटी वाले या डेंगू के गंभीर होने की स्थिति में तेजी से प्लेटरेट्स कम होने लगती हैं और यहां तक कि शरीर के दूसरे ओरगन्स को प्रभावित करती हुई मौत का कारण भी बन जाती है। हांलाकि डेंमू के कारण मौत की रेट नाममात्र की है पर इसकी गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि डेंगू के कारण मौत के आंकडें भी साल दर साल बढते ही जा रहे हैं।

कोरोना ने दुनिया के देशों को बहुत कुछ सिखाया है। घर की चार दीवारी में कैद होने से लेकर सबकुछ बंद होने के हालातों से दो–चार हो चुके हैं। अपनों को अपने सामने ही जाते हुए देखा है तो प्लेग को छोड दिया जाये तो संभवत: यह पहला मौका होगा जब सब कुछ चाहते हुए भी कोरोना काल में अपनों को अंतिम विदाई तक भी सही ढंग से दे नही पाये हैं। कोरोना की त्रासदी से अभी उभर भी नहीं पाये हैं कि जानलेवा बीमारियों के नित नए वेरियंट सामने आ रहे हैं। इनके पीछे पिछडों देशों के सामने गरीबी एक कारण है तो दूसरी और जलवायु परिवर्तन के कारण डेंगू जैसे रोग तेजी से फैल रहे हैं। अत्यधिक बारिश, बाढ, अत्यधिक गर्मी, अत्यधिक सर्दी यहां तक की बेमौसम की बरसात जैसे हालात और आए दिन आने वाले समुद्री तूफान चिंता के कारण बनते जा रहे हैं। कोरोना ने तो छोटे–बड़े, गरीब–अमीर, विकसित–अविकसित किसी भी भेद नही किया और पूरी तरह से साम्यवाद को साकार किया।

इसमें कोई दो राय नहीं कि कोरोना ने लोगों में समझ पैदा की है। कोरोना काल में सतर्कता का जो संदेश गया वह भले ही आज बीते जमाने की बात हो गई हो पर डेंगू के संभावित खतरे को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन और दुनिया के देशों को कोई खास व प्रभावी रणनीति बनानी होगी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की हालिया रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के चार अरब लोग डेंगू संभावित क्षेत्र में है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के वैश्विक कार्यक्रम प्रमुख डॉ. रमन वेलायुधन का मानना है कि 2000 की तुलना में 2022 तक डेंगू से प्रभावित लोगों का आंकडे में आठ गुणा तक की बढ़ोतरी हो चुकी है। यदि हम हमारे देश भारत की ही बात करें तो 2018 में 101192 मामलें सामने आये थे वहीं 2022 में डेंगू के 233251 मामले सामने आएं। यदि 2020 के साल को छोड दिया जाए तो भारत में डेंगू के मामलें लगातार बढते ही रह हैं। कमोबेस यही हालात दुनिया के दूसरे देशों में देखने को मिल रहा है। डेंगू के कारण दुनिया के देशों में एकाध मौत के समाचार भी लगातार आ रहे हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि कोरोना ने लोगों में समझ पैदा की है। कोरोना काल में सतर्कता का जो संदेश गया वह भले ही आज बीते जमाने की बात हो गई हो पर डेंगू के संभावित खतरे को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन और दुनिया के देशों को कोई खास व प्रभावी रणनीति बनानी होगी। इसके लिए जहां साधन संपन्न व विकसित देशों को खुले दिल से आगे आना होगा वहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन को दुनिया के देशों में कार्यरत गैर सरकारी संगठनों व समाजसेवियों को आगे लाना होगा। जिस तरह से कोरोना का एकजुट होकर मुकाबला किया गया ठीक उसी प्रकार का प्रयास, जन जागरण अभियान, अवेयरनेस कार्यक्रम व रोकथाम के संभावित उपायों को प्रभावी तरीके से अंजाम देना होगा। जब आज दुनिया की आधी आबादी यानी कि चार अरब लोग आसानी से डेंगू की जद में आ सकते हैं तो उसकी गंभीरता को समझना होगा। जो पैसा डेंगू होने पर उसके ईलाज पर खर्च होता है उसमें से ही यदि कुछ राशि फोगिंग, टीकारण या अन्य सुरक्षात्मक उपायों पर खर्च की जाती है और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा साधनहीन, अविकसित व गरीब देशों तक डेंगू की रोकथाम के लिए अधिक सहायता पहुंचाई जाती है तो डेंगू की बढ़ती रफ्तार को काबू में किया जा सकता है। इसके लिए सरकारों को कोरोना की तरह एसओपी जारी करने के साथ ही लोगों को जागरुक करना होगा ताकि डेंगू के मच्छर को फैलने से रोका जा सके। दरअसल मच्छरों से पैदा होने वाली बीमारियां अधिक तेजी से फैलती है और बहुत जल्दी रोग ग्रसित कर देती है। इसलिए ठोस कार्ययोजना बनाकर आगे आना होगा। मजे की बात है कि डेंगू व मलेरिया आदि बदलते मौसम में अधिक सक्रिय हो जाते हैं। ऐसे में सतर्कता ही बचाव वाले सिद्वांत के साथ ही इसकी रोकथाम के उपाय करने होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

पधारो म्हारे देश के निमंत्रण की संवाहक है राजस्थानी संस्कृति

राजस्थान की धरती सांस्कृतिक कला का अनूठा मिश्रण है

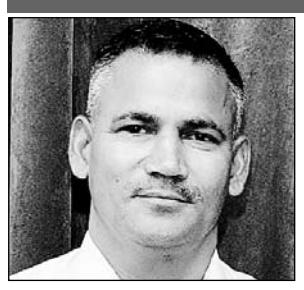

प्रकाश चन्द्र शर्मा

सभ्यता और संस्कृति के विषय में बड़ा भ्रम है। किसी विचार और व्यवहार को निखारना, धोना, मांजना या उसमें उतमोतम गुणों का आधान करना ही संस्कृति है। किसी समाज के विचारों, परम्पराओं, दर्शन, कला, शिल्प, साहित्य व धार्मिक विश्वासों का सामूहिक नाम ही संस्कृति कहा जाता है। बहुधा संस्कृति और सभ्यता को एक समझ लिया जाता है। किन्तु यह ठीक नहीं है। संस्कृति मानव समाज का आंतरिक सतत विकास है तो सभ्यता उसके बाह्य भौतिक जीवन का प्रदर्शन है।

राजस्थानी संस्कृति– मरु प्रदेश, राजपूताना और अब राजस्थान का भारतीय सांस्कृतिक मानचित्र पर विशिष्ट स्थान रहा है। मरुस्थल में फलती–फूलती शूरवीरों और राजपुत्रों की यह क्षात्र धर्मी धरा केवल शास्त्रों की झंकार और रणोंन्मादी हुंकारों से ही नहीं गूंजी है। रण के साथ ही रंग की साधना, इस धरती की यह विशेषता रही है, जिसने इसे भारतीय संस्कृति की बहुरंगी माला का मूल्यवान रत्न बना दिया गया है।

राजस्थान की सांस्कृतिक विशेषताएं– राजस्थानी संस्कृति की अनेक निजी तथा सामान्य विशेषताएं है, जो इस प्रकार है–

शूरता की साधना– राजस्थान सदा से शूरवीरों की जन्मस्थली रहा है। वीरता, स्वाभिमान और बलिदान की भावना इस प्रदेश के कण– कण में और मन–मन में समाई रही है। यहाँ के कवियों ने भी इस भावना पर धार चढ़ाई है।

बादल ज्यूँ सुरधनुष बिण, तिलक बीणा दूज पुत
बनो न सोभे मौड़ बिण घाव बीणा रजपूत।

यहाँ की माताओं ने पालने में ही पुत्र को अपनी भूमि की रक्षा का प्राण निछावर करने की लोरियां सुनाई है। व्यक्तिगत वीरता के प्रदर्शन की उन्मत्तता ने इस धरती पर अनेक निरर्थक रक्तपात भी कराए है। तथापि शूर वीरता राजस्थानी संस्कृति का प्रधान गुण है। शरणागत रक्षा– यहाँ के शासकों ने शरण में आए शत्रुपक्षीय व्यक्ति की रक्षा में अपना सर्वस्व दांव पर लगाया है। हमीर इस परम्परा की मूर्द्धन्य मणि है–

जौहर व्रत– यहाँ भी राजस्थानी संस्कृति की निजी विशेषता रही है। पतियों के केसरिया बाना धारण करके युद्धभूमि में जाने के पश्चात अपने सतीत्व की रक्षा तथा पत्नीव्रत का पालन करने वाली राजपूत नारियाँ जलती चिता में कूदकर जान दे देती थी, इसी को जौहर कहते है।

अतिथि सत्कार– राजस्थान अपने उदार आतिथ्य भाव के लिए सदा से प्रसिद्ध रहा है। अतिथि बनने पर शत्रुओं तक को उचित सम्मान देना, यहाँ की संस्कृति की विशेषता रही है।

साहित्य एवं कला प्रेम– राजस्थान में केवल रण की ही साधना नहीं हुई, यहाँ शिल्प, कला और साहित्य को भी भरपूर सम्मान और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। कवियों को राज्याश्रय मिला। अनेक उत्कृष्ट काव्यकृतियों का स्रजन हुआ और आज तक यह परम्परा निर्बाध चली आ रही है।

त्यौहार तथा उत्सव– राजस्थान अपने त्योहारों और उत्सवों के लिए भी प्रसिद्ध है। गणगौर तथा तीज जैसे विशिष्ट सांस्कृतिक छाप वाले त्योहारों के साथ यहाँ सभी प्रदेशों में प्रचलित होली, दीपावली, दशहरा, रक्षाबंधन आदि त्यौहार भी उत्साह के साथ मनाये जाते है। त्योहारों के अतिरिक्त राजस्थान में अनेक मेले और उत्सव भी मनाये जाते है। पुष्कर, करौली, भरतपुर, तलवाड़ा, धौलपुर आदि के उत्सव प्रसिद्ध है।

धार्मिक प्रवृत्तियाँ– राजस्थान में धर्म के प्रति गहरी आस्था सदा से रही है। यहाँ अनेक धर्मानुयायी निवास करते है। अनेक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल यहाँ प्रतिष्ठित है। धार्मिक अनुष्ठान तथा परम्परागत संस्कारों को भी यथेष्ट महत्व प्राप्त हो रहा है।

संस्कृति पर आधुनिक प्रभाव– संस्कृति कोई जड़ अवधारणा नहीं होती। वह परिवेश और परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। अन्य भारतीय प्रदेशों की भांति राजस्थानी संस्कृति भी आधुनिकता की घुसपैठ से प्रभावित हुई है। लोगों की सोच और शैली में परिवर्तन हुआ है। शिक्षा का प्रचार प्रसार हुआ है। अनेक रूढ़ियाँ और परम्पराएं शिथिल हुई है।

नाथद्वारा का श्रीनाथ मंदिर पिछवाई कला के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान का विशिष्ट नृत्य घूमर है, जिसे उत्सवों के अवसर पर केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है। राजस्थान ने भारतीय कला में अपना योगदान दिया है और यहाँ साहित्यिक परम्परा मौजूद है। विशेषकर भाट कविता की। चंदबरदाई का काव्य पृथ्वीराज रासो या चंद रासा, विशेष उल्लेखनीय है, जिसकी प्रारम्भिक हस्तलिपि 12वीं शताब्दी की है।खुद जहूरखां मेहर ई आपरै लेखन नै इण खास गद्य रचना रै कोण सूं देखै। राजस्थानी संस्कृति रा चितराम री भूमिका रै आखिर में औ लिखै के– ''बारा कड़ियां मांय सूं अक ई राजस्थानी गद्य में तुसियै जित्ती ई गिणीजगी तो म्हैं तौ भरपायौ।''

राजस्थानी संस्कृति पुरानी और परम्परा प्रिय रही है किन्तु वह निरंतर विकासशील भी है देश तथा विदेश में होने वाले नवीन परिवर्तन से वह अछूती नहीं है। अपनी परम्परागत विशेषताओं की रक्षा करते हुए वह नवीनता की लहरों में भी बह रही है। आधुनिकता और परम्परा का यह समन्वय राजस्थान की संस्कृति को जीवंत बनाए रखेगा।

राजस्थानी संस्कृति एक बहती नीरा है, जो गाँव–गाँव ढानी, चौपाल, पनघट, महल, झौपड़ी, किले, गढ़ी खेत खलिहान में बहती हुई जन जन रुपी सागर के संस्पर्श से इंद्रधनुषीय छटा बिखेरती है। और अपनी महक के साथ पर्व, मेले, तीज त्योहार, नाट्यय, नृत्य, श्रृंगार पहनावा, रीती रिवाज, आचार व्यवहार आदि में प्रतिबिम्बित होती है तथा जिसे रेत के धोरों के साथ साथ वायुमंडल, वसुंधरा तथा रोम रोम में उल्लसित एवं तरंगित अनुभूत किया जा सकता है। राजस्थानी संस्कृति समष्टिगत, समन्वयात्मक एवं प्राचीन है।

भौगोलिक विविधता एवं प्राकृतिक वैभव ने इसे और आकर्षक बनाया है। वस्तुत: राजस्थानी संस्कृति लोक जीवन को प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृति है। पधारों म्हारे देश के निमंत्रण की संवाहक राजस्थानी संस्कृति सांसकृतिक पर्यटन की पर्याय है। सम्रद्ध लोक संस्कृति के परिचायक तीज त्योहार उमंग के प्रतीक मेले, आस्था और विश्वास के प्रतीक लोक देवता, फाल्गुन की मस्ती में नृत्य करती आकर्षक परिधान से युक्त महिलाएं पर्यटकों को चमत्कृत करने के लिए पर्याप्त है।

धरती धोरा री की झिलमिलाती रेत एवं गूंजता सुरीला लोक संगीत पर्यटक को अभिभूत करने वाला होता है। राजस्थान की संस्कृति एवं परम्परा की मुख्य बात यह है कि राजस्थान के जनमानस की विशालता ने जिस प्रकार सभी मान्यताओं और आस्थाओं को फलने फूलने दिया। सूफीमत के संदेशवाहक ख्वाजा साहब के दरबार की दरबार के प्रखर कव्वाल और गायक थे। शंकर शम्भु कव्वाल आज अजमेर सूफी मत का अंतर्राष्ट्रीय प्रमुख तीर्थ है। पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर जिले के नाकौड़ा भैरव जैनियों के पूजनीय है ही परन्तु सनातनियों के मान्य भी है। मेवाड़ के केसरियाजी जैनियों के मान्य है और सनातनियों के भी है। यही स्थिति उन लोक देवताओं की है। जिन्होंने वहां के सुदूर अंचलों में स्थित आदिवासियों, जनजातियों एवं किसानों को सदियों से आस्था के सूत्र में बांधे रखा।

रुणिचा में चिर समाधि में लीन रामदेव, जिस प्रकार हिन्दुओं के रामदेव है उसी प्रकार मुसलमानों के भी रामसा पीर है। आज भी बाबा रामदेव उत्तर भारत के प्रमुख पूजनीय देवताओं में से एक है। पाबूजी राठौड़ की गोरक्षा हेतु प्राणहुती सम्बन्धी लोक गाथा लाखों को भाव विभोर करती है। लोक गायकों के द्वारा पाबूजी की फड़ को गेय में बांचने की प्रथा मध्यकाल से चली आ रही है।

यहाँ एक कहावत प्रसिद्ध है। सात वार नौ त्योहार। राजस्थान के मेले और पर्व त्योहार रंगारंग एवं दर्शनीय होते है। ये पर्व त्योहार लोगों के जीवन उनकी खुशियाँ और उमंग के परिचायक है। प्राय: इन मेलों और त्योहारों के मूल में धर्म होता है, लेकिन इनमें से कई मेले और त्योहार अपने सामाजिक और आर्थिक महत्व के परिचायक है। मनुष्य और पशुओं की अंतनिर्भरता को दर्शाने वाले पशु मेले राजस्थान की पहचान है। पुष्कर का कार्तिक मेला, परबतसर और नागौर के तेजाजी का मेला, जो मूलत: धार्मिक है। राज्य के बड़े पशु मेले माने गये है। राजस्थान में तीज को त्योहारों में पहला स्थान दिया गया है।

राजस्थान में एक कहावत प्रसिद्ध है। तीज त्योहारा बावरी ले डूबी गणगौर। इसका अर्थ है कि त्योहारों के चक्र की शुरुआत श्रावण महीने की तीज से होती है तथा साल का अंत गणगौर के साथ होता है।

गणगौर धार्मिक पर्व होने के साथ ही राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। राजस्थान में पुरा संपदा का अटूट खजाना है। राजस्थान के ख्यातनाम दुर्गों में चित्तौड़, जैसलमेर, रणथम्भौर, गागरोन, जालौर, सिवाना तथा भटनेर का दुर्ग ऐतिहासिक दृष्टि से प्रसिद्ध रहे है। इनके साथ शूरवीरों के पराक्रम, वीरांगनाओं के जौहर की रोमांचक गाथाएं जुड़ी हुई हैं, जो भारतीय इतिहास की अनमोल धरोहर है। राजस्थान के जनमानस को ये दुर्ग और इनसे जुड़े आख्यान सदा से ही प्रेरणा देते आए है। वीरता एवं शौर्य के प्रतीक ये गढ़ और किले अपने अनूठे स्थापत्य, विशिष्ठ सरंचना, अद्भुत शिल्प एवं सौन्दर्य के कारण दर्शनीय है।

राजस्थान की चित्रशैलियाँ भी इसके वैभव का प्रमाण है। बूंदी, नाथद्वारा, किशनगढ़, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर आदि राजस्थान की चित्रकला के रंगीन पृष्ट है। जिनमें श्रृंगारिकता के साथ–साथ लौकिक जीवन की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। राजस्थानी शैली गुजराती एवं जैन शैली के तत्वों को अपने में समेटकर मुगल शैली में समन्वित हुई है।राजस्थान के वीर तथा वीरांगनाओं ने जहाँ रणक्षेत्र में तलवारों का जौहर दिखाकर विश्व इतिहास में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित किया हैं, वहीँ भक्ति और आध्यात्मिक क्षेत्र क्षेत्र में भी राजस्थान पीछे नहीं रहा है। यहाँ मीरा एवं दादू भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत रहे है। भक्ति गीतों में जहाँ एक ओर लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रतिष्ठा मिली है वही व्यक्ति स्वातंत्र्य का स्वर फूटा और लोकपरक सांस्कृतिक चेतना उजागर हुई है। यहाँ के मेलों और त्योहारों के आयोजन में सम्पूर्ण लोकजीवन पूरी सक्रियता के साथ शामिल होकर अपनी भावनात्मक आस्था का परिचय देता है। लोकनृत्य राजस्थानी संस्कृति के वाहक है। यहाँ के लोकनृत्यों में लय, ताल, गीत, सूर आदि का एक सुंदर और संतुलित सामजस्य देखने को मिलता है। गेर, चंग, गीदड़, घूमर, ढोल आदि नृत्य राजस्थान के जनजीवन की संजीवनी बूटियां है। इस बूटी की घूंटी को लेकर राजस्थान के जनजीवन और लोकमानस ने भूखा नंगा रहते हुए भी मस्ती और परिश्रम से जीना सीखा है।

–प्रकाश चंद्र शर्मा,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

सर्वांगीण विकास के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जरूरी : राज्यपाल कलराज मिश्र

राजसमंद, (निसं)। राज्यपाल कलराज मिश्र और विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी पी जोशी ने बुधवार को दो महत्वपूर्ण विकास कार्य जनता को सुपुर्द किए।

उन्होंने नाथद्वारा में श्रीगोवर्द्धन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के नवीन भवन एवं बिलोता में सुखाडिया विवि के राजकीय कन्या महाविद्यालय के नवीन भवन का लोकार्पण किया। कार्यक्रमों में सहकारिता मंत्री एवं प्रभारी मंत्री उदयलाल आंजना, शिक्षा मंत्री डॉ बी डी कल्ला, सांसद दिया कुमारी और मिराज समूह के अध्यक्ष मदन पालीवाल आदि उपस्थित रहे। राज्यपाल और विधानसभा अध्यक्ष ने भगवान श्रीनाथजी के दर्शन कर आशीर्वाद लिया और देश–प्रदेश की खुशहाल की कामना की। इस दौरान

राज्यपाल कलराज मिश्र और विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी पी जोशी ने दो महत्वपूर्ण विकास कार्य जनता को सुपुर्द किए।

संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट, जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना एवं एसपी सुधीर जोशी सहित अन्य ने उनकी अगवानी की। नाथद्वारा में श्रीगोवर्द्धन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय को सौ साल पूर्ण होने कर नवीन भवन की सौगात मिली। राज्यपाल, विधानसभा अध्यक्ष, सहकारिता मंत्री और शिक्षा मंत्री ने विद्यालय भवन का लोकार्पण किया।

■ बिलोता में कन्या महाविद्यालय और नाथद्वारा में श्रीगोवर्धन रा.उ.मा.वि. के नवीन स्कूल भवन का लोकार्पण

लोकार्पण के पश्चात विधानसभा अध्यक्ष डॉक्टर सी पी जोशी ने राज्यपाल को विद्यालय के नवीन भवन का अवलोकन कराया और यहां विद्यार्थियों को मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी दी। राज्यपाल कलराज मिश्र ने बच्चों से अध्ययन और खेलकूद दोनों गतिविधियों को साथ–साथ जारी रख जीवन में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। विधानसभा अध्यक्ष डॉ सी पी जोशी ने कहा कि वह छठी कक्षा से 11वीं कक्षा तक इसी स्कूल में पढ़े। उन्होंने विधायक मद से इस विद्यालय में 50 लाख रुपए की लागत से अंग्रेजी लिंग्विस्टिक लैब स्थापित करने की भी घोषणा की।

शिक्षा मंत्री डॉ बी डी कल्ला ने कहा कि राज्य में आईसीटी क्लासेस को लेकर अभूतपूर्व कार्य हुआ है। राज्यपाल कलराज मिश्र और विधानसभा अध्यक्ष डॉ सी पी जोशी ने अंत में बिलोता में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के नॉर्थ कैंपस एवं श्रीनाथजी पीठ सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में विश्वविद्यालय के अधीन निर्मित राजकीय कन्या महाविद्यालय के नवीन भवन का लोकार्पण किया।

किराये के कमरों में चलाए जा रहे हैं आंगनबाड़ी केंद्र

चाकसू, (निसं)। चाकसू नगरपालिका परिक्षेत्र में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा लगभग दो दर्जन से अधिक आंगनबाड़ी केंद्रों का संचालन किया जा रहा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार अधिकांश आंगनबाड़ी केंद्रों के पास अपना स्वयं का भवन नहीं होने से किराए के कमरों में मुश्किल चलाए जा रहे हैं। विभाग की तरफ से किराया नाममात्र का स्वीकृत होने के कारण इन केंद्रों को ढंग का भवन या कमरा भी नहीं मिल पा रहा है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं आशा सहयोगिनी को नाममात्र का मानदेय दिया जाकर खानापूर्ति की जा रही है। नन्हे मुन्नों को स्कूल पूर्व की शिक्षा, संस्कार के साथ गुणवत्तापूर्ण पोषाहार दिया जा रहा है। साथ ही क्षेत्र की गर्भवती एवं धात्री महिलाओं के नियमित स्वास्थ्य की देखरेख एवं आवश्यकता के अनुसार उनको पौष्टिक आहार भी दिया जा रहा है। सबसे बड़ी समस्या आंगनबाड़ी

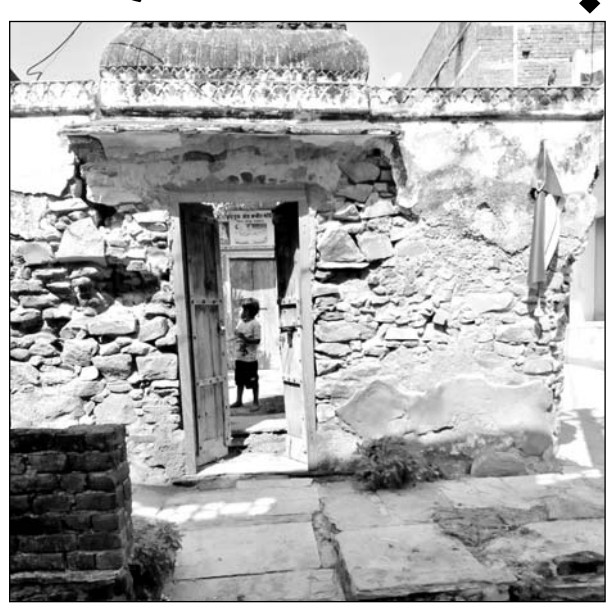

अधिकारियों की उपेक्षा के शिकार आंगनबाड़ी केंद्र के जर्जर भवन।

केंद्रों को सुविधाजनक भवन एवं परिसर की होती है, जो किसी के पास उपलब्ध

■ नन्हे–मुन्नों के साथ कभी भी हो सकती है अनहोनी

नहीं है।

चाकसू के वार्ड नंबर 10 में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र की भवन पूर्णत: जर्जर हो चुका है, दीवारों के पत्थर निकल कर बड़े बड़े छेद हो चुके हैं। यह भवन इतना क्षतिग्रस्त हो चुका है कि कभी भी गिर सकता है एवं अंदर पढ़ने वाले अबोध बालकों के जीवन को खतरा हो सकता है। कहने को तो यह भवन संत कबीरदास मंदिर कहलाता है, लेकिन पिछले अनेक वर्षों से न तो इस भवन की मरम्मत हो सकी और न ही जीर्णोद्धार बताया जा रहा है। कबीरदासजी को मानने वाले दो गुट परस्पर विवादों में उलझे हुए हैं। इस तरफ किसी का ध्यान नहीं है। आंगनबाड़ी 10 की संचालिका से बात करने पर पता चला कि भवन की जर्जर स्थिति के बारे में विभाग के सीडीपीओ, शिक्षा विभाग के सीबीईओं, एसीबीईओ आदि को जानकारी दे दी गई है। आग्रह एवं अनुरोध भी किया है कि पचास कदम की दूरी पर स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय भवन के खाली पड़े तथा अनुपयोगी कक्षा कक्ष अस्थाई तौर पर उपलब्ध करवा दिया जाए तो कम से कम अस्थाई समाधान हो सकता है। मुख्य ब्लाक शिक्षा अधिकारी हनुमान सहाय, अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी प्रकाशचंद, नोडल अधिकारी रामलाल मीणा ने आश्वासन दिया था कि निकटवर्ती स्कूल में कमरा उपलब्ध करवाने की कार्यवाही चल रही है। लेकिन अभी तक सफलता नहीं मिल रही।

अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी प्रकाशचंद मीणा ने बताया कि उच्च प्राथमिक विद्यालय नम्बर एक के प्रधानाचार्य सहयोग करने में लापरवाही कर रहे हैं।

राशिफल गुरूवार 28 सितम्बर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 1:48 तक, गंड योग रात्रि 11:54 तक, गर करण प्रात: 8:34 तक, चन्द्रमा रात्रि 8:28 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कन्या, चन्द्रमा–कुम्भ, मंगल–कन्या, बुध–सिंह, गुरू–मेष, शुक्र–कर्क, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज रवियोग रात्रि 1:48 तक है। भद्रा सांय 6:50 से शुक्रवार प्रात: 5:09 तक रहेगी। आज अनन्त चतुरदशी व्रत, चान्द पूर्णिमा व्रत, सिंजा माता पूजन आरम्भ होगा। आज पंचक है और ईद–ए–मिलाद (बारावफात) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:50 तक, चर 10:48 से 12:48 तक, लाभ–अमृत 12:18 से 3:16 तक, शुभ 4:45 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:21, सूर्यास्त 6:13

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। मानसिक तनाव बना रहेगा।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

कन्या
आर्थिक मामलों से संबंधित विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। आज अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

वृश्चिक
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।